मैदान में डटे हैं मिसाइल मैन

स्ट्रासबुर्ग (फ्रांस) से आलोक मेहता

राष्ट्रपति चुनाव के लिए उलटी गिनती शुरू हो चुकी है। कुछ हफ्तों की ही बात है। इसलिए फ्रांस और यूनान (ग्रीस) के लिए विशेष विमान में यात्रा के दौरान मुलाकात होते ही डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के सामने सवाल रखा जाता है कि वह दूसरी बार राष्ट्रपति बनने के लिए तैयार हैं? हम यह भी जानते थे कि अंतरिक्ष वैज्ञानिक होते हुए भी आकाश में मिसाइल छोड़ने की तरह स्वयं अपनी उम्मीदवारी की घोषणा नहीं कर देंगे। लेकिन हां, 'मिसाइल मैन' की दिशा समझी जा सकती है। घुमा-फिराकर बार-बार पूछे गए प्रश्नों के उत्तर में डॉ. कलाम ने 'सेवानिवृत्ति के साथ पुन: प्राध्यापक बनने या वैज्ञानिक अनुसंधान करने' जैसी कोई बात नहीं कही। उनका इतना ही कहना है- 'आर्थिक विकास की गति को आगे बढ़ाना है। पद नहीं, राष्ट्र महत्वपूर्ण है।' विमान में साथ चल रहे वरिष्ठ पत्रकारों, विश्लेषकों और राजनयिक अधिकारियों ने एक ही निष्कर्ष निकाला- 'मिसाइल मैन डॉ. कलाम अभी राष्ट्रपति चुनाव की दौड़ के मैदान में डटे हुए हैं। यूपीए और एनडीए की राजनीतिक कठिनाइयां उनके नाम पर सर्वानुमति बनवा सकती हैं।'

लगभग 45 मिनट तक हुई अनौपचारिक बातचीत में यह भी स्पष्ट हो गया कि पांच वर्षों के अनुभव से डॉ. कलाम चतुर राजनीतिज्ञ की तरह बात करने लगे हैं। राजनीतिज्ञों और गठबंधन की राजनीति पर उनका नजरिया स्पष्ट है। वह उनसे निराश और नाराज भी नहीं हैं। एक सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि 'राजनीतिज्ञ लड़ते-झगड़ते हैं लेकिन मिलकर काम भी करते हैं, हंसते-बोलते भी हैं। प्रजातंत्र में यह सब होता है।' छोटे-छोटे दलों पर निर्भरता वाले गठबंधन की अपेक्षा सशक्त बड़े राजनीतिक दलों के शक्तिशाली होने से अधिक स्थिरता तथा प्रगति की बात उठाने पर डॉ. कलाम ने माना कि 'अभी मंथन चल रहा है और संभव है कि इसी से दो-तीन राजनीतिक दल अधिक प्रभावशाली ढंग से निकलकर सामने रह सकेंगे।'

परिवार में बस वैज्ञानिक

भारत ही नहीं, दुनिया के अन्य देशों के राष्ट्रपति-प्रधानमंत्री जब अपने विशेष विमान से विदेश यात्राएं करते हैं तो उनके परिवार के कुछ सदस्य साथ होते हैं। भारत के एक पूर्व राष्ट्रपति तो 'भरा-पूरा परिवार' (10-12 सदस्य) और साग-सब्जी के साथ खास रसोइये भी साथ लेकर जाते थे लेकिन 75 वर्षीय डॉ. कलाम की विदेश यात्रा में परिवार के खाते में भारत के वरिष्ठ वैज्ञानिक होते हैं। उनकी यात्रा के कार्यक्रम की विस्तृत विवरणिका में वाई.एस. राजन, प्रो. एन. बालकृष्णन, डॉ. बी. सोमराजु तथा डॉ. नारायण मूर्ति के नाम राष्ट्रपति के पारिवारिक अतिथि के रूप में दर्ज हैं। राष्ट्रपति डॉ. कलाम से एक अन्य यात्रा के दौरान भारत की बढ़ती आबादी के संबंध में सवाल किया गया था तो उन्होंने हंसकर उत्तर दिया था- 'इसमें मेरा कोई योगदान नहीं है। मैं ब्रह्मचारी रहा हूं।'

वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ कविता

पत्रकारों से चर्चा के बाद डॉ. कलाम जब अपने केबिन में बैठकर कुछ लिखने-पढ़ने लगे तो हमने जानने की कोशिश की कि यात्रा के समय वह क्या लिख रहे होंगे? पता चला- यात्रा के दौरान अथवा राष्ट्रपति भवन में भी थोड़ा समय मिलने पर कलाम साहब कविताएं लिखते रहते हैं। उनकी कविताएं तमिल में हैं। अंतरिक्ष, चांद-सूरज, मंगल ग्रह, टेक्नॉलॉजी पर चिंतन, अनुसंधान के बीच उनके दिल-दिमाग में कविता भी घूमती रहती है। यात्रा में साथ चल रहे एक वरिष्ठ अधिकारी ने टिप्पणी की- 'अंदाज लगाइए